अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

आत्महित और संघहित की दिशा में बनें प्रवर्धमान

-अहंकार और ममकार से दूर रहने की आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा

-पांच वर्ष बाद गुरुदर्शन पाकर प्रफुल्लित हुई साध्वियां

-चतुदर्शी के अवसर पर हाजरी का आचार्यश्री ने किया वाचन

03.02.2019 तिरुपुर (तमिलनाडु): तिरुपुर की धरती पर पहली बार पधारे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में आयोजित वर्धमान महोत्सव के तृतीय व अंतिम दिवस तिरुपुरवासियों को महातपस्वी आचार्यश्री की मंगलवाणी के साथ-साथ साध्वीप्रमुखाजी की मंगलवाणी को श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो वहीं अंतिम दिन भी गुरुकुलवास की प्रवर्धमानता जारी रही। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में साध्वी लब्धिश्रीजी ने अपने सिंघाड़े के साथ आचार्यश्री के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त किया।

वर्धमान महोत्सव के तृतीय दिवस का शुभारम्भ महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी द्वारा मंत्रोच्चार के द्वारा हुआ। सर्वप्रथम साध्वियों तथा समणी प्रणवप्रज्ञाजी द्वारा गीत का संगान किया गया। तत्पश्चात साध्वीप्रमुखाजी ने लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए संघ के महत्त्व को बताते हुए लोगों को संघ के प्रति आस्थावान बने रहने को प्रेरित किया। मुख्यमुनिश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कौशल विकास, आध्यात्मिक विकास, सहिष्णुता और विनम्रता की दिशा में आगे बढ़ने को उत्प्रेरित किया।

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि क्षांति और मुक्ति में आदमी को वर्धमान बने रहना चाहिए। आदमी के जीवन में आरोह और अवरोह की भी स्थिति बनती है। आदमी के जीवन में कभी आरोहण करते-करते अवरोह की स्थिति आ जाती है। आरोहण से अवरोहण होता है तो आदमी का मन क्षतिग्रस्त हो जाता है। उस अपमान की स्थिति में आदमी कैसे रहे, इसके लिए आदमी को प्रयास करना चाहिए। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों भी आदमी को उपशांत रहने का प्रयास करना चाहिए। दोनों परिस्थितियों में आदमी सम रहने का प्रयास करे। कभी उलाहना, डांट आदि मिले तो भी विनम्र भाव से सहने का प्रयास करना चाहिए।

आसक्ति एक बन्धन और अनासक्ति मुक्ति के समान होती है। आदमी को अनासक्ति की ओर वर्धमान होने का प्रयास करना चाहिए। अहंकार और ममकार को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इनको दूर करने की मानों व्यवस्था तेरापंथ धर्मसंघ के साधु संस्था में पूर्व में ही की गई है। यहां के विधान में कोई पद का उम्मीदवार नहीं होता। यह बात अहंकार से दूर रहने वाली हो सकती है। कोई साधु-साध्वियां अपने-अपने शिष्य-शिष्याएं नहीं बना सकते। यह व्यवस्था अहंकार और ममकार को मानों दूर रखने के लिए की गई है। इस प्रकार आदमी को आत्महित, संघ हित और शरीर हित में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

पांच वर्ष बाद गुरुदर्शन को पहुंची साध्वीश्री लब्धिश्रीजी ने अपने सिंघाड़े के साथ आचार्यश्री के दर्शन करने के उपरान्त अपनी सहवर्ती साध्वियों संग गीत का संगान किया तथा अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। तिरुपुर के विधायक श्री गुणशेखर ने आचार्यश्री के दर्शन कर अपनी भावाभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से पावन आशीष प्राप्त किया। बालिमुनियों द्वारा वर्धमान महोत्सव के संदर्भ में गीत का संगान किया। श्री शांतिलाल झाबक, वर्धमान महोत्सव व्यवस्था समिति के संयोजक श्री प्रकाश दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। बालिका साक्षी सेठिया ने गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से अपने आराध्य के श्रीचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की।